आरती – संतोषी माता की

जय संतोषी माता, मैया जय संतोषी माता ।
अपने सेवक जन की सुख–सम्पति दाता ।। 1 ।। मैया जय....
सुन्दर चीर सुनहरी मां धारण कीन्हो ।
हीरा पन्ना दमके तन श्रृंगार लीनों ।। 2 ।। मैया जय....
गेरू लाल छटा छवि बदन कमल सोहे ।
मन्द हंसत करूणामयी, त्रिभुवन मन मोहे ।। 3 ।। मैया जय....
स्वर्ण सिंहासन बैठी, चँवर ढुरें प्यारे ।
धूप, दीप, मधुमेवा भोग धरें न्यारे ।। 4 ।। मैया जय....
गुड़ अरू चना परम प्रिय तामें संतोष किये ।
संतोषी कहलाई भक्तन वैभव दिये ।। 5 ।। मैया जय....
शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही ।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही ।। 6 ।। मैया जय....
मंदिर जग मग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई ।
विनय करें हम बालक, चरणों सिर नाई ।। 7 ।। मैया जय....
भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै ।
जो मन बसै हमारे, इच्छा फल दीजै ।। 8 ।। मैया जय....
दुःखी, दरिद्री, रोगी, संकट मुक्त किये ।
बहुत धन–धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिये ।। 9 ।। मैया जय....
ध्यान धरा जाने तेरा मनवांछित फल पायो ।
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनन्द आयो ।। 10 ।। मैया जय....
शरण गहे की लज्जा, रखियो जगदम्बे ।
संकट तू ही निवारौ, दयामयी अम्बे ।। 11 ।। मैया जय....
सन्तोषी माँ की आरती जो जन गावे ।
रिद्धि–सिद्धि सुख–सम्पति जी भरके पावे ।। 12 ।। मैया जय....